ISSN 2321-1288

R A J H I S C O

RAJASTHAN HISTORY CONGRESS

RAJASTHAN HISTORY CONGRESS
RHC
ESTD. 1967
RAJHISCO

PROCEEDING VOLUME XXX

DEPARTMENT OF HISTORY,
MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY
UDAIPUR

DECEMBER - 2015

Scanned with CamScanner

Editorial Board takes no responsibility for inaccurate misleading data, opinion and statement appeared in the articles published in this Proceeding. It is the sole responsibility of the contributors. No part of this Proceeding can be reproduced without the written permission of the Secretary, who also holds the copyright © of the 'Proceeding Rajasthan History Congress'.

- *Published by :*
  Prof. S.P. Vyas
  Secretary, Rajasthan History Congress
  Department of History
  J.N.V. University, Jodhpur

- *To be had from :*
  Dr. Manorama Upadhayaya
  Hony. Treasurer, Rajasthan History Congress
  Mahila PG Mahavidyalaya, Jodhpur

- ISSN 2321-1288

- Price :
  Rs. 250/- only

- *Printed at :*
  Jangid Computers, Jodhpur

Scanned with CamScanner

Preface

I feel honoured and proud, to present before the readers and scholars, the proceedings of 30th session, organized by Mohanlal Sukhadia Unviversity, Udaipur on 15-16 December 2015. In placing the learned, scholarly papers, chronology has been adhered to, as far as possible. A number of papers of outstanding merit were presented in this session, breaking new ground and adding new research areas and elements to the history and culture of Rajasthan.

I extend my thanks to all those who have made the publication of this proceeding possible. I humbly acknowledge the guidance of Prof. P.R. Arya. I appreciate the hard-work and sincere efforts of Dr. Manorama Upadhyaya, Dr. Tejendra Vallabh Vyas, Dr. Anil Purohit, Dr. Ravindra Tailor in the publication of the proceeding. Thanks are also due to Mr. Bhanwarlal Suthar and Mr. Sunil of M/s. Jangid Computers for the printing of the proceedings.

(Prof. S.P. Vyas)
Secretary
Rajasthan History Congress

Scanned with CamScanner

4. कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की पुनर्समीक्षा की आवश्यकता
- विक्रमसिंह अमरावत ... 547

5. मेवाड़-राज्य के सामाजिक-आर्थिक पहलू का स्रोत 'देवलोक पधारिया की बहियां (कानोड़ ठिकाना के संदर्भ में)
- डॉ. जे.के. ओझा ... 551

6. सूरजकंवर ब्याव री बही - विशेष संदर्भ (वैवाहिक रीतियाँ और दहेज का ब्यौरा)
- डॉ. अल्पना दुभाषे ... 558

7. खाना रिकॉर्डस् में क्षेत्रीय इतिहास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
- डॉ. अनिल पुरोहित ... 562

8. राजस्थान में 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम - आउवा (मारवाड़) के विशेष संदर्भ में
- कनिका भनोत ... 569

9. राजस्थान की जन-जागृति में आरंम्भिक पत्र-पत्रिकाओं का योगदान (1849-1920 ई. तक की पत्र-पत्रिकाओं के सन्दर्भ में)
- डॉ. सुरेश कुमार ... 580

0. राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम में पत्र-पत्रिकाओं का प्रभाव (1920 ई. में 1947 ई. तक)
- डॉ. दिनेश राठी ... 585

1. राजस्थान में स्वाधीनता आन्दोलन : अजमेर मेरवाड़ा के मुस्लिम स्वत्रन्ता सेनानियों के विशेष संदर्भ में
- डॉ. इकबाल फातिमा ... 592

2. स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान शेखावाटी क्षेत्र में जन-जागृति में महिलाओं की भूमिका
- नरेन्द्र कुमार सैनी ... 599

3. गोवा मुक्ति संग्राम में झालावाड़ के सत्याग्रही : श्री छोटेलाल वर्मा
- डॉ. अर्चना द्विवेदी ... 604

4. प्रथम विश्वयुद्ध में मेवाड़ का योगदान
- डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित ... 609

5. जैसलमेर राज्य में परम्परागत चिकित्सा सुविधा : एक अध्ययन (1818-1900 ई.)
- डॉ. एम.आर. गढवीर ... 613

6. बीकानेर रियासत और औद्योगिक एवं व्यापारिक वर्ग
- डॉ. महेन्द्र पुरोहित ... 621

7. राजस्थान की बैंकिंग व्यवस्था में उभरती नवीन प्रवृत्तियाँ (18वीं से 19वीं शताब्दी तक)
- डॉ. कुलवन्त सिंह शेखावत ... 625

Scanned with CamScanner

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान शेखावाटी क्षेत्र में जन-जागृति में महिलाओं की भूमिका।

नरेन्द्र कुमार सैनी

शेखावाटी की महिलायें अपने शौर्य, त्याग और बलिदान के लिए सदैव ह अग्रणी रही है। जहाँ यहाँ की महिलाओं ने पुरुषों से कंधे से कँधा मिलाकर खेत खलिहान और कारखानों में काम किया है वहीं इन्होंने आन्दोलनों में अत्याचारों के खिलाफ पुरुषों के साथ-साथ संघर्ष किया तथा जेल गयी है। शेखावाटी की आम गलियों में जाग्रति का अंकुरण सन् 1925 से प्रस्फुटित हुआ जब उन्हें शिक्षा की ओर आकृष्ट किया गया।

सन् 1932 जाट महासभा, झुन्झुनू में हजारों महिलायें सम्मिलित हुई थी जिन्होंने विद्यार्थी भवन बनाने के लिए पन्नेसिंह देवरोड़ के आह्वान पर सभा स्थल में अपने गहने उतार दिये थे तथा बाद में सीकर में प्रजापति महायज्ञ में 1934 ई. में बड़ी संख्या में भाग लिया। उस समय अनेक महिला कार्यकर्त्ता मैदान में आ चुकी थी। श्रीमती उत्तमा देवी के नेतृत्व में एक सशक्त महिला संगठन बन चुका था। जो पुरुषों की भाँति समाज सुधार और आवश्यकता पड़ने पर अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष करने को तैयार थी। प्रत्येक गांव में शेखावाटी के अग्रिम पंक्ति के नेताओं की धर्म पत्नियां स्थानीय नेतृत्व करने लगी। उन्होंने रुढ़िग्रस्त संस्कारों को तिलांजलि देकर आर्य संस्कारों को स्वयं ग्रहण किया और समाज में उनका पूरा प्रचार किया। परम्परागत लोक गीतों की जगह नये लोक गीतों को अपनाया।

संभ्रात और जागरूक महिलाओं में विशेष रूप से दुर्गादेवी, उत्तमादेवी, रामेश्वरी देवी शर्मा (श्रीमाधोपुर), रमा देवी (सीकर), किशोरी देवी पत्नी सरदार हरलाल सिंह फूलां देवी (मांडासी), अनुसूया देवी (बग्गड़), विमला देवी (चिड़ावा), सिणगारी देवी (परतापपुरा), म्होरी देवी (पातुसरी), गौरां देवी (हनुमानपुरा), किशोरी देवी पत्नी ख्यालीराम (झामरवासी), रामप्यारी देवी, अंजना देवी और अनुसुया बहिन जी (अध्यापिकाएं) आदि प्रमुख थीं। जिन्होंने महिलाओं को संगठित किया और पुरुषों की भांति किसी भी संघर्ष का मुकाबला करने को प्रेरित करती रहती थी। इनके एक आह्वान पर हजारों महिलायें एकत्रित हो जाया करती थी इन्होंने गांव-गांव और घर-घर जाकर स्वतंत्रता की ज्योति प्रज्जवलित की तथा नारी शिक्षा तथा प्रत्येक कार्य में भागीदारी का पाठ पढ़ाया चाहे इनमें से कुछ एक महिलायें अनपढ़ रही हो फिर भी इन्होंने महिलाओं के

Scanned with CamScanner